ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 246-247**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

भारत में महिलाओं की वर्तमान स्थिति की सामाजिक विवेचना

प्रीति सिंह

एम0ए0, बी0एड0, पी0एच0डी0, राजनीति विज्ञान विभाग, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी (उ0प्र0) भारत

Received-08.03.2023, Revised-14.03.2023, Accepted-19.03.2023 E-mail: preetysingh963@gmail.com

सारांशः ***वर्तमान समय में चारो ओर चाहे शहरी क्षेत्र हो या ग्रामीण महिला सशक्तिकरण पर चारो ओर विचार–विमर्श हो रहा है, लेकिन सही मायनो में कितने प्रतिशत लोग इसके सन्दर्भ को समझ पाते है, यह कहना बेहद ही कठिन है और हमारा भारतीय समाज इस सशक्तिकरण को स्वीकार कर पा रहा है। यह अनुसंधान करना भी बेहद कठिन है, लेकिन जिस तरह से भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में द्रुत गति से परिवर्तन हुआ है वो अपने आप मे ं काबिले तारीफ है क्योकि स्वतंत्रता के पहले और स्वतंत्रता के बाद की परिस्थिति में जो सुधार हुआ उसने लगभग हर क्षेत्र का विकास किया। भारतीय समाज में महिलाओं की दशा और दिशा में भी परिवर्तन आया, जो निःसन्देह काबिले तारीफ रहा और आने वाले समय में और भी सुधार की कल्पना की जा सकती है। इन सबके बावजूद भी अभी भी देश की आधी से अधिक आबादी अपने अधिकारों से वंचित है, मात्र भी हमारे सामने पीड़ित महिलाओं के उदाहरणों में कमी नहीं है।***

कुंजीभूत शब्द– शहरी क्षेत्र, ग्रामीण महिला सशक्तिकरण, भारतीय समाज, अनुसंधान, परिवर्तन, काबिले, आबादी।

समाचार पत्र, चैनल, वेब चैनल आये दिन महिलाओं के ऊपर होने वाले हिंसा, घरेलू हिंसा, दहेज हत्या, भ्रूण हत्या की दिन पर दिन बढ़ती घटनाओं से भरे पड़े मिलते हैं, साथ ही साथ इनके दिन पर दिन बढ़ते हुये आंकड़ों को भी नजरअंदाज नही किया जा सकता।[1] महिला सशक्तिरण की जब भी बात की जाती है, तब सिर्फ राजनैतिक और आर्थिक सशक्तिकरण पर चर्चा होती है पर सामाजिक सशक्तिकरण की चर्चा नहीं होती।

महिलाओं को न सिर्फ पुरुषों से अपितु जातीय संरचना में भी सबसे पीछे रह गया है। इन परिस्थितियों में उन्हें राजनैतिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त करने की बात बेमानी लगती है, जब तक महिलाओं का सामाजिक सशक्तिकरण नहीं होगा तब तक वह अपने कानूनी अधिकारों का समुचित उपयोग नहीं कर सकेगी। सामाजिक आधार एक जटिल प्रक्रिया है, प्रश्न यह भी उठना स्वभाविक है कि सामाजिक सशक्तिकरण का जरिया क्या हो सकता, जिनका स्तर भी सीधा सा है कि शिक्षा ऐसा कारगर हथियार है, जो सामाजिक विकास की गति को तेज करता है।[2] समानता, स्वतंत्रता के साथ–साथ शिक्षित व्यक्ति अपने कानूनी अधिकारों का राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त भी होता है। यदि हम इतिहास की ओर एक बार नजर दौड़ाते हैं, तो यह सच्चाई भी कही न कही उजागर होती है कि महिलाओं को ऐतिहासिक रूप से शिक्षा से वंचित रखने का षड़यंत्र भी इसलिये किया गया कि न वो शिक्षित होगी न ही वह अपने अधिकारों की मांग करेगी, अर्थात् वे दूसरे दर्जे की नागरिक ही बन कर रह जायेगी। यही एक बहुत बड़ी बजह रही है जो भारत में बहुत सालों तक महिलाओं के शिक्षा प्रतिशत में भारी गिरावट दर्ज की गयी। हालांकि इसमें कोई सन्देह नहीं कि वर्तमान समय में राष्ट्रीय एवं अंर्तराष्ट्रीय परिस्थितियों का दबाव एवं जागरूकता के कारण शिक्षा के स्तर एवं प्रतिशत में काफी बढ़ोत्तरी दर्ज की गयी है। महिला और पुरुष दोनों ही सामाजिक पथ के धुरी है। एक को अनदेखा करके समाज का संतुलित विकास हम कभी नहीं कर सकते हैं, समय की मांग है और समाज की जरूरत भी है, कि महिलाओं को भी पुरुषों के समान अधिकार मिले, जो उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चले। वर्तमान समय के प्रासंगिकता को यदि देखा जाये, तो महिलायें हर क्षेत्र में पुरुषों के समान ही लगभग सभी चुनौतियों से लड़ रही है और निःसन्देह पुरुषों से आगे भी है, लेकिन दुर्भाग्य की बात ये है कि समाज के पुरुष प्रधान मानसिकता वाले लोग यह मानने के लिये स्वीकार करने को तैयार ही नहीं कि महिलायें भी उनके समान बराबर हो, यही वो लोग है, जो महिलाओं के खुले विचारों वाली कार्यशैली को बर्दाश्त नहीं कर पाते हैं।

21वीं सदी के उतरार्द्ध और 21वीं सदी के इस दशक में नौकरी पेशा महिलाओं की बढ़ोत्तरी हुयी तो पुरुषों की मानसिकता में परिवर्तन आया। आर्थिक दृष्टि से महिलायें अर्थ के केन्द्र की ओर बढ़ रही है, अर्थशाप ने समाजशास्त्र को बौना कर दिया है। आज की नारी हर उस क्षेत्र को छू रही है, जो कभी उनसे अछूता था और दिन प्रतिदिन नये आयाम को गढ़ रही है, आंकड़ें ये दर्शा रहे है कि वर्तमान के वर्षों के कोई भी प्रतियोगी परीक्षा हो वहां महिलाओं का प्रतिशत पुरूषों की तुलना में ज्यादा है। गांधी जी ने कहा था कि एक लड़की की शिक्षा एक लड़के की शिक्षा से ज्यादा महत्वपूर्ण है, क्योंकि लड़के को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित होता है, किन्तु एक लड़की की शिक्षा से पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है।[3]

शिक्षा ही वह कुंजी है, जो जीवन के सभी द्वार खोल देती है, जो कि आवश्यक रूप से सामाजिक है। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त जिस प्रकार से हमारे संविधान ने विभिन्न विधियों के माध्यम से महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार मिलें इससे उनकी स्थिति में उत्तरोत्तर परिवर्तन हुआ। दहेज पर कानूनी प्रतिबन्ध लगा तथा कठोर दण्डात्मक व्यवस्था भी किया गया।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

पारिवारिक सम्पत्ति पर पुत्रियों के भी बराबर अधिकार ने उन्हें विधिक एवं सामाजिक सारोकार में प्रथम दृष्टया समान कर दिया। वर्तमान समय में लिव–इन रिलेशनशिप का जो प्रचलन बड़ें–बड़ें शहरों में काफी तेजी से जोर–शोर पकड़ रहा है। सरकार उस पर भी कानून बनाने को लेकर प्रयासरत है। इक्कीसवीं सदी महिलाओं की है, इसमें महिलाओं की क्षमताओं और कौशल का विकास करके उन्हें अधिक सशक्त बनाने तथा समक्ष समाज को महिलाओं की स्थिति और भूमिका के संबंध में जागरूक बनाने के प्रयास किये गये। सन् 2001 में जब प्रथम बार 'राष्ट्रीय महिला नीति' बनायी गयी, जिससे देश में महिलाओं के लिये विभिन्न क्षेत्रों में उत्थान और समुचित विकास की आधारभूत विशेषताएं निर्धारित किया जाना संभव हो सका।[4]

वर्तमान समय में यह एक उदाहरण के तौर पर सामने आया है कि महिलाओं ने स्वयं के अनुभव के आधार पर अपनी मेहनत और आत्म विश्वास के आधार पर अपने लिये नयी मंजिलें, नये रास्तों का निर्माण किया है।[5] यह भी सत्य है कि वर्तमान समय में भारत सरकार के द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिये अनेक कार्यक्रम एवं योजनाओं का संचालन तो किया जा रहा है, लेकिन इन योजनाओं का क्रियान्वयन निचले स्तर तक उचित ढ़ग से न पहुंच सकने के कारण महिलाओं को अपेक्षित लाभ नहीं मिल पा रहा है। स्त्री की अपेक्षित आजादी तभी होगी जब उसके दिमाग की स्वीकार्यता होगी। उनकी निजी स्वतंत्रता और खुद फैसले लेने की स्वीकार्यता होगी।

इस बात से भी हम इंकार नहीं कर सकते की हमारी नारी शक्ति ऐसी व्यवस्था में रह रही है, जहां महिलाओं को सशक्त बनाना आसान नहीं, फिर भी हम महिलाओं को हर तरह से प्रयास करना होगा। महिलाओं को मानसिक रूप से मजबूत होकर खुद को अपने आप को प्रस्तुत कर हर जगह शिखर पर स्थापित करना होगा और वह परिवर्तन हर महिला को स्वयं के घर परिवार से शुरू करना होगा, एक सशक्त नारी के कन्धों पर ही संतुलित स्वस्थ, विकसित समाज की नींव रखी जायेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बरगौहाई, पल्लवी, क्यों जरूरी है महिला सशक्तिकरण, पंजाब केसरी, 2017.
2. राजू कुमार, शिक्षा में छिपा है महिला सशक्तिकरण का रहस्य।
3. डॉ0 राजकुमार, नारी के बदलते आगाम, अर्जुन पब्लिसिंग हाउस, 2005.
4. गुप्ता, कमलेश कुमार, महिला सशक्तिकरण बुक एनक्लेव, जयपुर।

*****